International Research Journal ISSN-0975-3486 RNI : RAJBIL 01488 VOL. I * ISSUE—1

शोध पत्र–शिक्षा

SEPT—2009

छत्तीसगढ़ राज्य की उच्च प्राथमिक स्तर की हिन्दी भाषा की पाठ्यपुस्तकों में मूल्यों का समावेशन एक अध्ययन

डॉ. (श्रीमती) रश्मि चतुर्वेदी

सहायक प्राध्यापक, शिक्षा संकाय बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प.)

आज के विश्व में मनुष्य के आचरण में तेजी से आती हुई नैतिक गिरावट तथा अशांति के वातावरण को देखकर प्रायः सभी प्रबुद्ध विचारक चिंतित है। नैतिक अवमूल्यन के साथ–साथ हमारी आस्थाएँ विखंडित हो रही है। सामाजिक विघटन हो रहा है, परिवार छिन्न–भिन्न हो रहे है। चारों ओर अपराधों और युद्धों का वातावरण बना हुआ है। इन समस्याओं को दूर करने का तरीका है शिक्षा द्वारा विश्व में शांति एवं मूल्यों की पुनः प्रतिष्ठा। प्रत्येक राष्ट्र का भविष्य उसकी शिक्षा व्यवस्था पर निर्भर होता है। हम किसी भी देश के आज विद्यार्थी को देखकर सहज यह अनुमान लगा सकते है कि उस देश के कल के नागरिक कैसे होंगें। जिस समाज में अज्ञान, अन्याय और अभाव एक छत्र साम्राज्य करे उस समाज की क्या दशा होगी इसकी कल्पना मात्र ही की जा सकती है। अब माता–पिता की भूमिका केवल जन्म देने तक रह गई है।

शेष कार्य बालक अपने आप कर रहे है। नैतिक मापदण्ड तो उसी समय फिसल जाते है जब बालक कहता है कि हम तो हमारे माता–पिता की त्रुटियों के परिणाम है।'' बालक का यह कथन आज के माता–पिता तथा आचार्य पर एक करारी चोट है। इस कथन में समाज के सभी अभिकरणों की कर्तव्यहीनता छिपी हुई है। माता–पिता बालक को विद्यालय भेजकर अपने कर्तव्य की इतिश्री समझ लेते है। अध्यापक बालक को मशीन की तरह पढ़ाकर तथाकथित ज्ञानवान की श्रेणी में ला बैठाते है। आये दिन ऐसी अनेक घटनाएँ सुनाई पड़ती है जिसमें छात्रों द्वारा शिक्षक–शिक्षिकाओं का अपमान, अनुशासनहीनता, सामाजिक सम्पत्ति को हानि पहुँचाना आदि सम्मिलित है।

यह कोई अचानक घटने वाली घटना नही है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व एवं पश्चात जब विदेशी शिक्षा प्रणाली को हमने अपना लिया, उसी क्षण वर्तमान स्थिति का बीजारोपण हो चुका था। अब छात्रों के व्यवहार की सर्वत्र आलोचना की जाती है। अनेक विशेषणों से उन्हे विभूषित किया जाता है। परन्तु क्या वास्तव में हमारा छात्र समुदाय ही इसके लिए दोषी है? कदापि नही इसके लिये एकमात्र यदि कोई है तो वह है हमारी शिक्षा–पद्धति। वर्तमान युग में मानव जाति विकासात्मक संक्रान्ति से गुजर रही है। समय के साथ मूल्य भी परिवर्तित हो रहे है। मूल्य सिखाने, संस्कार देने वाली शिक्षा की आज सर्वत्र आवश्यकता है। यदि शिक्षा मनुष्य को आदर्श मानव नही बनाती है तो वह किस काम की। आज नैतिकता की नितान्त आवश्यकता है। क्योंकि मूल्यों का हर स्थान पर पतन हो रहा है। अतः भारतवर्ष की नई शिक्षा नीति में इस पर विशेष बल दिया गया है। कई राज्यों में नैतिक शिक्षा व मूल्यों पर पाठ्य पुस्तकें तैयार कर उसे एक विषय के रूप में प्रारंभ किया गया है।

स्वतंत्रता पश्चात विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (1948–49) से लेकर दसवीं पंचवर्षीय योजना तक अनेक आयोगो समितियों एवं नीतियों में शिक्षा को मूल्य आधारित कर मानव चेतना विकासोन्मुखी करने पर बल दिया है। माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952–53) ने चरित्र की शिक्षा

शीर्षक के अंतर्गत धार्मिक तथा नीति निर्देश एवं भारतीय शिक्षा आयोग (1964–66) में सामाजिक, नैतिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों की शिक्षा पर बल दिया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में शिक्षा द्वारा वर्तमान शिक्षा में मानवीय मूल्यों के समावेशन पर जोर देते हुए समाज में मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा के लिये शिक्षा को एक प्रभावकारी माध्यम स्वीकार किया गया है।[1]

मानव संसाधन विकास मंत्रालय में 5 अगस्त 1999 को आयोजित मूल्य शिक्षा के विशेषज्ञों की एक बैठक में यह निर्णय लिया गया था कि एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा सभी पाठ्यक्रमों का पुनरीक्षण किया जायेगा, जिससे कि पाठ्यपुस्तकों में मानवीय मूल्यों के समावेशन का आंकलन किया जा सके। इसका स्वंत्रत रूप में अध्ययन किया जाना नितांत आवश्यक है जिससे कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति भारत के संविधान तथा राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा में अपेक्षित मूल्यों का पाठ्यपुस्तक में समावेशन का अध्ययन किया जा सके।[2] राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूप रेखा 2005 में राष्ट्रीय फोकस समूह के शिक्षा के लक्ष्य के आधार पत्र में कहा गया कि ''अगर मूल्य शिक्षा को शिक्षा का एक जरूरी हिस्सा बनाना है तो मूल्यों या सदाचारों को शिक्षा की पूरी प्रक्रिया का अंदरूनी अंग होना होगा। यहाँ हमें पुरजोर तरीके से अहिंसा, शांन्ति, और सद्भाव के गाँधीवादी विचारों का पुनः स्मरण करने की जरूरत है''।[3]

इस शोध पत्र में छत्तीसगढ़ राज्य शिक्षा केन्द्र द्वारा प्रकाशित माध्यमिक स्तर के हिन्दी भाषा की पाठ्यपुस्तकों में समावेशित किये गये मूल्यों का अध्ययन किया गया है। इस संबंध में जो कार्य पूर्व में हुए है उनमें से महत्वपूर्ण कार्य निम्नानुसार है :–

1. प्रोफेसर मित्रा द्वारा मूल्य शिक्षा के विभिन्न आयामों पर बहुत विस्तार से लिखा गया है। उनके द्वारा शिक्षा में विभिन्न प्रकार के मूल्य तथा शिक्षा में विभिन्न Controversies का भी उल्लेख किया है। यद्यपि उनके द्वारा पाठ्यपुस्तकों में मूल्यों के समावेशन के बारे में कोई विवेचना नही की गई है।[4]

2. श्री किरीट जोशी की अध्यक्षता में वर्ष 1983 में मूल्य शिक्षा की आवश्यकता के प्रकाश में शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की समीक्षा हेतु गठित कार्य समूहों द्वारा मूल्य शिक्षा के अध्ययन अध्यापन के क्षेत्र में अत्यन्त ही महत्वपूर्ण कार्य किया गया।[5] 3. आर.सी. दास, द्वारा विभिन्न हाई स्कूलों में मूल्य शिक्षा के अध्यापन हेतु अपनाये गये तरीकों का अध्ययन किया गया। इस अध्ययन में पाठ्यपुस्तकों में उपलब्ध मूल्यों का वैज्ञानिक रूप से विश्लेषण नही किया गया।[6] 4. श्री ई. हक (1973) द्वारा हिन्दी नागरिक शास्त्र और इतिहास की कक्षा 9वीं, 10वीं एवं 11वीं की किताबों के विश्लेषण में मूल्यों के प्रस्तुतिकरण को न तो व्यवस्थित पाया न ही उसमें कोई बारम्बारता पायी गई। विद्यार्थियों की मानसिक परिपक्वता का भी ध्यान नही रखा गया है। भाषा की पाठ्यपुस्तक केवल साहित्य दृष्टिकोण से ही लिखी गई।[7]

5. यू.एस.चौधरी (1974) ने 8वीं कक्षा तक की पाठ्य पुस्तकों का विश्लेषण कर पाया कि इनमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण, न्याय, साधारण जीवन एवं कर्तव्य परायणता जैसे मूल्यों को कोई स्थान नही दिया गया। जहां एक ओर एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित पुस्तकों में साहस एवं साहसिक कार्यो को अधिक स्थान दिया गया। वही राज्य सरकार की पुस्तकों में देश भक्ति को अधिक स्थान दिया गया।[8] 6. पिल्लई (1976) द्वारा तमिलनाडु राज्य की अंग्रेजी तथा तमिल भाषा की 9वीं कक्षा की पाठ्यपुस्तकों का विश्लेषण किया जाकर पाया गया कि उनमें धार्मिक मूल्यों का प्रतिनिधित्व अपर्याप्त था। यह कार्य केवल धार्मिक मूल्यों के विश्लेषण पर ही आधारित होने से इसकी सीमाऍ बहुत कम थी।[9] 7. सुशीला (1977) ने पाया कि कर्नाटक राज्य की माध्यमिक स्तर की सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों में धर्म निरपेक्षता के मूल्य को प्रभावी रूप से समाहित किया गया है।[10]

8. उषा श्री (1993) ने तमिलनाडु राज्य की माध्यमिक शालाओं में दी जाने वाली मूल्य शिक्षा का मूल्यांकन किया। आंकलन में पाया गया कि 7वीं, 9वीं तथा 10वीं की किताबों में अधिकतम ध्यान वास्तविक जीवन की घटनाओं से प्राप्त उदाहरण के दिये गये।[11] 9. गुरूशरण कौर जुनेजा ने एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित विज्ञान की कक्षा 6वीं, 7वी एवं 8वी की पाठ्यपुस्तकों में निहित वैज्ञानिक मूल्यों का अध्ययन किया। इस पुस्तक में उन्होनें राष्ट्रीय पाठ्यचर्या (1988) एवं विज्ञान की एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित पाठ्यपुस्तकों में वर्णित मूल्यों के आधार पर पाठ्यपुस्तकों का अध्ययन कर पाया कि इन पुस्तकों में अपेक्षा के

अनुसार वैज्ञानिक मूल्य निहित है।[12] 10. श्री एस.के. संतोष ने देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इंदौर में एम.एड. उपाधि हेतु प्रस्तुत लघु शोध प्रस्ताव में मध्यप्रदेश की कक्षा 6 से 12वीं तक की हिन्दी की पाठ्यपुस्तकों में मूल्योन्मुख्ता का अध्ययन किया है। इस अध्ययन में अधिकांशतः पाठों के विषयवस्तु का विवरण दिया गया है परन्तु उनके द्वारा निहित मूल्यों की बारम्बारता पर वैज्ञानिक तरीके से अध्ययन नही किया गया।[13] 11. मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार द्वारा मूलभूत कर्तव्यों को आम जनता में पहुँचाने के लिए जस्टीस जे.एस. वर्मा की अध्यक्षता में गठित कमेटी की रिपोर्ट के पैरा 3.1 तथा 3.2 में भारत के संविधान में निहित मूल्यों के संबंध में प्रस्ताव दिये गये। इस रिपोर्ट के पैरा 6.1 में स्कूलों के पाठ्यक्रमों के विश्लेषण हेतु निर्देश दिये गये।[14]

12. क्षेत्रीय शिक्षण संस्थान भुवनेश्वर द्वारा वर्ष 2003 में विभिन्न महान व्यक्तियों के जीवन चरित्र के माध्यम से विद्यार्थियों को मूल्य शिक्षा देने हेतु विकसित किये गये पाठों को मुद्रित किया गया।[15] 13. एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा वर्ष 2004 में मूल्य शिक्षा के पाठ्यपुस्तकों के समावेशन का अध्ययन प्रस्तुत किया गया।[16] 14. केन्द्रीय शिक्षा सलाहकार परिषद द्वारा वर्ष 2005 में शासकीय व्यवस्था के बाहर संचालित शालाओं में पढ़ाई जा रही पाठ्यपुस्तकों के नियंत्रक तंत्र प्रस्तावित करने हेतु बनाई गई समिति ने अपनी रिपोर्ट में बिहार, छत्तीसगढ़, दिल्ली, जम्मू–कश्मिर, कर्नाटक, केरल एवं मध्यप्रदेश राज्यों में पढ़ाई जा रही निजी स्कूल संचालकों द्वारा पढ़ाई जा रही पाठ्यपुस्तकों का विषयवस्तु विश्लेषण किया।[17]

इस कार्य हेतु मूल्यों का निर्धारण नई शिक्षा नीति (1986)[18] विद्यालयी शिक्षा के लिये राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा वर्ष 2000,[19] राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा वर्ष 2005[20] तथा भारत के संविधान[21] में उल्लेखित मूल्यों को मानक स्वीकार करते हुए किया गया है। इनमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति एवं राष्ट्रीय पाठ्यचर्या में निहित मूल्यों का निर्धारण 4–6 दिसम्बर 2001 में क्षेत्रीय शिक्षण संस्थान भुवनेश्वर में आयोजित कार्यशाला में किया गया, जबकि संवैधानिक मूल्य भारत के संविधान की उद्देशिका (Preamble) से लिये गये। इन अलग–अलग क्षेत्रों से लिये मूल्यों में जिन मूल्यों की आवृत्ति एक से अधिक स्त्रोत में हुई, उन्हे गणना की दृष्टि से एक ही बार लिया गया है। इसके पश्चात प्रत्येक पाठ्यपुस्तक की एक सम्मिलित तालिका तैयार की गई जिसमें कोई भी मूल्य उस पाठ्यपुस्तक में कितनी बार प्रदर्शित हुआ उसकी बारम्बारता (फ्रीक्वेंसी) तथा पूरी पाठ्यपुस्तक में प्रदर्शित कुल मूल्यों में वह मूल्य कितना प्रदर्शित हुआ उसका प्रतिशत निकाला गया। शोधा पत्र हेतु विभिन्न कक्षाओं की पाठ्यपुस्तकों में प्रदर्शित मूल्यों की फ्रीक्वेंसी तथा प्रतिशत हेतु सम्मिलित तालिका बनाई गई जिसके आधार पर राज्य शिक्षा केन्द्र छत्तीसगढ़ द्वारा हिन्दी भाषा की कक्षा 6, 7 एवं 8 का मूल्यों के समावेशन की दृष्टि से पाठ्यवस्तु विश्लेषण किया गया।

छत्तीसगढ़ राज्य की कक्षा 6 की पुस्तक 'भारती' में कुल 23 पाठ है। जिनमें 6 पाठ कविता के , 6 कहानी के पाठ, 1 प्रेरक प्रसंग, 1 चरित्र, 3 निबंध, 1 जीवनी, 1 पत्र, 2 व्यंग्य, 1 आत्मचरित तथा 1 एकांकी का संग्रह है। पाठ्यपुस्तक के विश्लेषण से मुख्यतः अधिकांश पाठों में विभिन्न मूल्यों का समावेशन प्रतीत होते है। पूरी पाठ्यपुस्तक में जो मूल्य सबसे अधिक प्रदर्शित हुए है, वे हैं प्रेम (0.86%), मानवीयता (9.36%), सहिष्णुता (6.74%) एवं साहस (8.6%)। पाठ में सबसे कम प्रदर्शित होने वाले मूल्य संवैधानिक मूल्य है, जिसमें न्याय, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक, प्रतिष्ठा और अवसर की समानता तथा धर्म एवं उपासना की स्वतंत्रता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में दर्शाये मूल्य यथा राष्ट्रीय पहचान के पोषण के लिये आवश्यक विषयवस्तु, समतावाद, लोकतंत्र तथा पंथ निरपेक्षता, स्त्री–पुरुष समानता तथा छोटे परिवार के मापदण्ड को भी पुस्तक में कोई स्थान नही मिल सका है। राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की रूपरेखा वर्ष 2005 में अपेक्षित मूल्य कार्य विचार की स्वतत्रता एवं परस्पर बंधुत्व का प्रसार प्रदर्शित नही हुए है। इसी प्रकार विद्यालयी शिक्षा के लिये राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा वर्ष 2000 में अपेक्षित नागरिकों के मूलभूत कर्तव्य, उद्यमिता एवं लोकतांत्रिक भावना को भी स्थान नही मिला है।

सुदर्शन जी द्वारा लिखित पाठ 22 की कालजयी कहानी –'हार की जीत' में लेखक ने एक डाकू के हृदय परिवर्तन की घटना को बड़े ही भावपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया है। बाबा भारती के प्रिय घोड़ें सुल्तान को जब डाकू खड़गसिंह अपाहिज बनाकर छल बल से छीन लेता है तब

बाबा भारती का खड़गसिंह से यह कहना कि ''इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना लोगों को यदि इस घटना का पता चल गया तो वे किसी गरीब पर विश्वास न करेंगे।'' डाकू का हृदय परिवर्तित कर देता है।

इस कहानी से जहाँ एक ओर लेखक के मानवीय संवेदनाओं को बड़ी खूबसूरती से उभारा है वही दूसरी ओर मानवीयता, प्रेम, सहिष्णुता, विश्वास जैसे मूल्यों को भी प्रमुखता के साथ प्रस्तुत किया है जो कक्षा 6 में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के बालमन को बरबस ही छू जाती है। वहीं दूसरी ओर मूल्य की दृष्टि से सर्वाधिक कमजोर पाठ क्रमाक 16 ''चचा छक्कन ने केले खरीदे'' है जिसमें एक भी मूल्य प्रदर्शित नही हुआ है यह व्यंग्य विधा का पाठ है। यह पाठ श्री इम्तियाज अली द्वारा लिखित है। इसमें चचा छक्कन, चची तथा परिवार के अन्य सदस्यों की अनुपस्थिति में एक दर्जन केले खरीदते है लेकिन स्वयं ही तरह–तरह के बहाने बनाते हुए, वे सब केले खा जाते है। पाठ के अंत में रचना में यह लिखना कि 'बच्चे जब घर लौटकर आये होंगे तब बिंदों ने उन्हे केले खरीदे जाने के संबंध में बताया होगा।' उस समय बच्चों और चचा में क्या संवाद हुआ होगा? कल्पना करके संवाद रूप में लिखिये सम्पादक मण्डल पिता और बच्चों के मध्य किस प्रकार के मूल्यों की कल्पना कर रहें है? अथवा क्या इस भारतीय मूल्यों एवं त्याग को छोड़कर पिता को एक स्वाथी अथवा खुदगर्ज इन्सान के रूप में प्रस्तुत करना चाहते है।

इसी प्रकार का एक अन्य पाठ क्रमांक 23 ''आलसीराम'' शीर्षक में है। पूरे पाठ में अंगद नाम के एक घोर आलसी व्यक्ति की कहानी है जो दूसरों के खेत से तरबूज चुराकर खाता था तथा पूछने पर चतुराई से उत्तर देता था कि मैं तो तरबूजों से पूछकर खाता हूँ। गांव वालों के सजा देने के पश्चात उसका हृदय परिवर्तन हो जाता है तथा वो सारे काम करने लगता है। इस कहानी को पढ़ने के बाद विद्यार्थी के मन में स्वतः यह प्रश्न उठ सकता है कि क्या किसी व्यक्ति को सुधारने के लिये सजा ही एकमात्र समाधान है अथवा जब तक सजा न मिले क्या चोरी की जा सकती है? कक्षा 7 की पाठ्यपुस्तक भारती में कुल 24 पाठ है। जिसमें 6 कहानियॉं, 6 कविताएँ, 1 प्रेरक प्रसंग, 3 चरित्र, 4 निबंध, 1 व्यंग्य, 1 यात्रा व तान्त, 1 पत्र तथा 1 एंकाकी है। पुस्तक के प्रारम्भ में संपादक मण्डल द्वारा कहा भी गया है कि ''इस पुस्तक के द्वारा हमने विद्यार्थियों को साहित्य की विभिन्न विद्याओं, निबंध, कहानी, कविता, पत्र, आत्मकथा, एंकाकी आदि से परिचित कराया है। साहित्य की इन विधाओं का परिचय उनकी अभिरूचि को परिष्कृत करके उनका श्रेष्ठ साहित्य के अध्ययन की ओर प्रेरित करेगा। यह हमारा विश्वास है। पाठ्यपुस्तक में राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा वर्ष 2005 नयी शिक्षा नीति तथा संविधान में दर्शायें मूल्यों का प्रदर्शित होना स्पष्ट होता है। यद्यपि राष्ट्रीय शिक्षा नीति वर्ष 1986 में प्रदर्शित मूल्य ही बहुत कम दृष्टिगत् हुए है। पाठ्यपुस्तक में कुल प्रदर्शित मूल्यों की बारम्बारता 236 है जिनमें से नयी शिक्षा नीति में प्रदर्शित मूल्य मात्र 17 बार अर्थात लगभग 7% ही प्रदर्शित हुए है। इसी प्रकार संविधान में अपेक्षित मूल्य कुल 7 बार (2.9%) ही प्रदर्शित है। पुस्तक में सर्वाधिक प्रदर्शित मूल्य प्रेम (10.86%), साहस (8.61%), मानवीयता (9.36%) है। जो मूल्य पूरे पाठ्यपुस्तक में एक भी बार प्रदर्शित नही हुए वे है– राष्ट्रीय पहचान के पोषण के लिये आवश्यक विषयवस्तु, समतावाद, लोकतंत्र तथा पंथनिरपेक्षता, देश की प्रगति में बाधक सामाजिक व्यवधानों को समाप्त करना, छोटे परिवार का मापदण्ड अपनाना, नागरिकों के मूलभूत कर्तव्य, नियमितता एवं समय पालन, सामाजिक न्याय, सहनशीलता, कार्य विचार की स्वतंत्रता, परस्पर बंधुत्व का भाव, अंतर्सांस्कृतिक समझ, मानवीय अधिकारों का सम्मान, लोकतंत्र के प्रति विश्वास, न्याय, धर्म एवं उपासना की स्वतंत्रता तथा प्रतिष्ठा एवं अवसरों की समानता। मूल्यों की दृष्टि से सर्वाधिक मूल्य पाठ 4 'सुब्रहम्ण्यम भारती' में (11.02%), पाठ 7 भीष्म साहनी द्वारा रचित कहानी 'मौसी' में (8.09%), तथा पाठ 3 गुरूदेव रविन्द्रनाथ टैगोर द्वारा लिखित 'कहानी' में (8.47%), बार प्रदर्शित हुए है। कहानी में एक अंधी भिखारिन अपने बच्चे के बिमार होने पर सेठ बनारसी दास के पास अपनी पूंजी लेने जाती है लेकिन सेठ के इन्कार करने पर वह अपने बच्चे को लेकर सेठ के दरवाजे पर बैठ जाती है। बच्चे को देखकर सेठ जी घबरा जाते है क्यों कि वह बच्चा तो उनका अपना बेटा था जो सात साल पहले एक मेले में खो गया था, वह बच्चे को भिखारिन से छीनकर डाक्टर को दिखाते है लेकिन बिना भिखारिन के डाक्टर की दवा भी काम नही करती अंततः सेठ जी भिखारिन को लेने उसके घर जाते है। चल

और मेरे..... नही, नही अपने बच्चे की जान बचा ले।'' अंधी ने उत्तर दिया मरता है तो मरने दो, मैं भी मर रही हूँ, हम दोनो स्वर्गलोक में फिर माँ बेटे की तरह मिल जायेंगे। इस लोक में सुख नही है। वहा मेरा बच्चा सुख में रहेगा। मैं वहाँ उसकी सुचारू रूपसे सेवा सुश्रुषा करूँगी। सेठ जी रो दिये। आज तक उन्होने किसी के सामने सिर न झुकाया था, किन्तु उस समय अंधी के पाँवों पर गिर पड़े और रो–रोकर बोले ममता की लाज रख लो, आखिर तुम भी उसकी माँ हो। चलो तुम्हारे चलने से वह बच जायेगा। ममता शब्द ने अंधी को विकल कर दिया। उसने तुरन्त कहा ''अच्छा चलो।'' बच्चे के ठीक होने पर बुढ़िया पैसे की थैली भी सेठ जी के पास यह कह कर छोड़ जाती है कि यह पैसे तो मैंने बच्चे के लिये ही जमा किये थे। पाठ 8 श्री हरिशंकर परसाई द्वारा लिखित व्यंग्य ''सदाचार का ताबीज'' है।

कुछ दिन बाद वे फिर वेश बदलकर उसी कर्मचारी के पास गये, उस दिन इकतीस तारीख थी महीने का आखिरी दिन, राजा ने फिर उसे पाँच का नोट दिखाया और उसने जेब में रख लिया राजा ने उसका हाथ पकड़ लिया बोले ''मैं तुम्हारा राजा हूँ'' क्या तुम आज सदाचार का ताबीज नही बांधकर आये। बांधा है सरकार यह देखिये ''राजा असमंजस में पड़ गये। फिर ऐसा कैसे हो गया? उन्होने ताबीज पर कान लगाकर सुना, ताबीज में से स्वर निकलरहे थे। यह प्रौढ़ तथा परिपक्व दिमागों के लिये, समाचार पत्रों तथा प्रत्रिकाओं में तो सम्मिलित किया जा सकता है परन्तु अपरिपक्व बच्चों तक पाठ्यपुस्तकों के माध्यम से जो बातें सीधे–सीधे पहुँचायी जा सकती है उन्हे नकारात्मक रूप से प्रस्तुत करने की उपादेयता पर विचार करना आवश्यक है। यहाँ यह कहना भी समीचीन होगा कि एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित हिन्दी भाषा की तीनों पुस्तकों में व्यंग्य विधा का प्रयोग निर्णय अनुसार है अथवा अनजाने में, यह निश्चित रूप से नही कहा जा सकता।

पाठ 12 मानसरोवर की यात्रा एक संकलित यात्रा वृतान्त है जिसमें लेखक ने अपने सारांश में तो मानसरोवर की यात्रा में, वहाँ की विविध प्राकृतिक दृश्यावलियों का अत्यन्त सजीव, आकर्षक एवं चित्रात्मक वर्णन किया है। बर्फ की चादर ओढ़े हिमालय की ऊँची, दूर–दूर तक फैली घाटियाँ, झीलों में बहता निर्मल, स्वच्छ जल, हिम वर्षा में बहाती बर्फीली पहाडियाँ सहज ही पर्यटकों का मन मोह लेती है। लेकिन पूरे पाठ का अवलोकन करने पर ऐसा प्रतीत होता है कि पूरे पाठ में योगाभ्यासी तीनों साथियों को पूरी मानसरोवर यात्रा के दौरान कष्ट ही कष्ट का अनुभव हुआ। किसी भी पैरे में मानसरोवर घाटी की सुन्दरता का वर्ण नही किया गया है। कक्षा 8 की पुस्तक 'भारती' राज्य शैक्षिक अनुसंधान प्रशिक्षण परिषद्, रायपुर द्वारा प्रकाशित इस पुस्तक में कुल 25 पाठ है। जिसमें से 7 कविताएँ, 6 निबंध, 3 कहानियाँ, 3 जीवनी, 1 एंकाकी, 1 यात्रा संस्मरण, 1 पत्र, 1 वार्तालाप, 1 व्यग्य तथा 1 लोककथा है।

इस पाठ्यपुस्तक में राष्ट्रीय शिक्षा नीति तथा संविधान की उद्देशिका में लिखे मूल्य सबसे कम बार प्रदर्शित हुए है। कुल 305 बार प्रदर्शित मूल्यों में से संवैधानिक मूल्य मात्र 9 बार (0.32%) तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति में प्रदर्शित मूल्य (0.32%) है। पाठ्य पुस्तक में सबसे अधिक बार प्रदर्शित मूल्य प्रेम, (14.43%), साहस (9.84%), रचनात्मकता (9.18%), सौन्दर्य मूल्यों का संवर्धन (8.52%) तथा भारत की सांस्कृतिक विरासत (10.49%) है। पाठ्य पुस्तक में कुछ मूल्य एक भी स्थान पर प्रदर्शित नही हुए जैसे संवैधानिक दायित्व, राष्ट्रीय पहचान के पोषण के लिये आवश्यक विषयवस्तु, समतावाद, लोकतंत्र तथा पंथनिरपेक्षता, देश की प्रगति में बाधक सामाजिक व्यवधानों को समाप्त करना, छोटे परिवारों का मापदण्ड अपनाना, नागरिको के मूलभूत कर्तव्य, सामाजिक न्याय, समानता, कार्य विचार की स्वतंत्रता, अन्तर्सांस्कृतिक समझ, मानवीय अधिकारों का सम्मान, सहनशीलता, लोकतंत्र के प्रति विश्वास, अहिंसा, न्याय, धर्म एवं उपासना की स्वतंत्रता, प्रतिष्ठा एवं अवसर की समानता तथा राष्ट्र की अखण्डता सुनिश्चित करने वाली बंधुता है। पुस्तक का पहला पाठ ''प्यारे भारत देश'' पंडित माखनलाल चतुर्वेदी द्वारा लिखित एक कविता है जो एक भारतीय आत्म' के नाम से विख्यात है कविता में कवि ने भारत भूमि के प्रति अपनी सहज भावना को उभारा है। यह कविता सहज ही बच्चों में देशभक्ति की भावना, साहस तथा मात भूमि के प्रति प्रेम एवं बलिदान की भावना भर देती है। पुस्तक में 'तैमूर की हार'' पाठ क्रमांक 10, पर है यह एक एंकाकी है जिसे डॉ. रामकुमार वर्मा ने लिखा है। एंकाकी के विचार बिन्दु में यह कहा गया है कि

''पाषाण हृदय व्यक्ति में भी दया, ममता, प्रेम, सहिष्णुता आदि मानवीय गुण होते है। खूँखार आक्रमणकारी तैमूर ने जब भारत पर आक्रमण किया उसका हृदय भी बालक बालकरन की बहादुरी से अभिभूत हो उठा। एंकाकी में तैमूर के इसी हृदय परिवर्तन के साथ–साथ देश, प्रेम, मातृभक्ति, वात्सल्य, हिन्दू–मुस्लिम एकता एवं राष्ट्रीय एकता का भी संदेश दिया गया है।'' पाठ 13 'स्वामी विवेकानंद' पर संकलित पाठ है। पाठ के अनुसार भारतीय संस्कृति के उन्नायक स्वामी विवेकानंद का जीवन एवं उनके ओजस्वी व्याख्यान राष्ट्रप्रेम, देश सेवा एवं उत्सर्ग के प्रेरणा देते है। एक ओर सम्पादक मण्डल ने अनेक प्रेरणादायी पाठों का संकलन करके पुस्तक को ग्रहणीय बनाया है वही दूसरी ओर पुस्तक में व्यंग्य विधा में हरिशंकर परसाई द्वारा लिखित ''समय पर मिलने वाले'' पाठ है जिसमें एक भी मूल्य प्रदर्शित नही हुआहै। पाठ का आरम्भ ही इस प्रकार से है– आदमी तीन तरह के होते है–(1) समय पर घर न मिलने वाले (2) समय पर किसी के घर न जाने वाले और (3) और न समय पर घर मिलने वाले और न समय पर किसी के घर जाने वाले। अर्थात मनुष्यों का कोई ऐसा प्रकार नही होता है जो समय की पाबंदी को समझे।

निष्कर्ष :–तीनों पाठ्यपुस्तकों का समग्र रूप से विश्लेषण करने पर यह स्पष्ट होता है कि पाठ्यपुस्तक मण्डल संविधान, राष्ट्रीय शिक्षा नीति तथा राष्ट्रीय पाठ्यचर्या में अपेक्षित अधिकांश मूल्यों को पाठ्यवस्तु में सम्मिलित कर पाने में सफल रहे है यद्यपि व्यंग्य विद्या पर सम्मिलित किये गये पाठ की मूल्यों के संदर्भ में उपादेयता संदिग्ध प्रतीत होती है, यह भी दिखाई देता है कि कक्षा 6 से कक्षा 8 की पाठ्यपुस्तकों में जाते हुए मूल्यों के समावेशन में कोई निश्चित क्रम दिखाई नही देता जिससे कि यह सिद्ध हो सके कि पाठ्यक्रम मण्डल विद्यार्थियों में मूल्यों के निश्चित क्रमिक विकास को क्रमबद्ध योजना पर गम्भीर हो, पाठ्यपुस्तकों में ऐसे पाठों की कमी प्रतीत होती है जो राष्ट्रीय शिक्षा नीति में प्रदर्शित होते है विशेषतः देश की प्रगति में बाधक सामाजिक व्यवधानों को समाप्त करना, स्त्री–पुरुष समानता तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास जैसे मूल्य और अधिक प्रमुखता से रखे जा सकते है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. नाईक जेपी, शिक्षा आयोग और उसके बाद, (वर्ष 1998) वागदेवी प्रकाशन, बीकानेर। 2. फण्डामेन्टल ड्यूटीज़ ऑफ सिटीजन्स, रिपोर्ट ऑफ दी कमेटी सेटअप बाई दी गवर्नमेन्ट ऑफ इंडिया टू ऑपरेशनेलाइज दी सजेशन्स टू टीच फण्डामेन्टल ड्यूटीज़ टू दी सिटीजन्स ऑफ दी कन्ट्री, वाल्यूम–1, मिनिस्ट्री ऑफ ह्यूमन रिसोर्स डेवलपमेन्ट, 31 अक्टूबर 1999, पृष्ठ 18–28 3. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005,शिक्षा के लक्ष्य राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार पत्र। 4. मित्रा डॉ. शिव कुमार, वैल्यू एजूकेशन एण्ड हैबिट्स, (वर्ष 1994) एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली । 5. रिपोर्ट ऑफ द वर्किंग ग्रुप टू रिव्यू टीचर्स ट्रेनिंग प्रोग्राम (इन द लाइट ऑफ द नीड फॉर वैल्यू ओरिएन्टेशन), (मई 1983) मानव संसाधन विकास मंत्रालय, 6. दास आर.सी., ए स्ट्डी ऑफ दी मैथड्स, एडाप्टेड बाई सलेक्टेड सेकण्ड्री स्कूल इन इंडिया फॉर दी डेव्लप्मेंट ऑफ मॉरल एण्ड एथिकल वैल्यूज एण्ड मेजरमेंट ऑफ दी वैल्यू जजमेंट ऑफ स्टूडेंट्स ऑफ क्लास नाईन्थ, (वर्ष 1991) क्षेत्रीय शिक्षण संस्थान, भुवनेश्वर। 7. श्री ई. हक,एजूकेशन एण्ड पॉलिटिकल मॉडल्स इन एजूकेशन एन एनालिसिस ऑफ टैक्सट बुक्स, ऑफ डेल्ही, (वर्ष 1973) एन.आई.ई. जनरल 7 (5) पृष्ठ 19–25। 8. चौधरी यू. एस.,ए कम्पेरेटिव स्टडी ऑफ वैल्यूज रिफ्लेक्टेड एन नेशनल एण्ड स्टेट लेवल हिन्दी टेक्सट बुक्स, (वर्ष 1974), एम.एड. लघुशोध प्रबंध इंदौर विश्वविद्यालय। 9. पिल्लई, एन एनालिटिकल स्ट्डी ऑफ दि रिलीजियस वैल्यूज एम्बैडेड इन दि प्रिसक्राइब्ड तमिल एण्ड इंग्लिश टेक्सट बुक्स फार स्टैंर्डड वन टू टेंथ इन तमिलनाडु, (वर्ष 1976) एम.एड. लघुशोध प्रबंध, अन्नामलाई यूनिवर्सिटी। 10. सुशीला, स्ट्डी ऑफ सिक्योलेरिजम ऐज रिफलेक्टेड इन दि सोशल स्ट्डी (पार्ट 1) टेक्सट बुक्स इन कर्नाटका स्टेट, (वर्ष 1977) एम.एड लघुशोध प्रबंध, मैसूर विश्वविद्यालय। 11. उषा श्री, रीस्ट्रक्चरिंग टीचर एजूकेशन फॉर वैल्यू एजूकेशन, वैंकट चलैया एन, संध्या एन; रिसर्च इन वैल्यू एजूकेशन, (वर्ष 2002) में उद्धत, पृष्ठ – 19 12. जुनेजा गुरूशरण कौर, (वर्ष 1988) एजूकेशन इन ह्यूमन वैल्यूस; एन. एनालिसीस ऑफ साइंस टेक्स बुक्स एन.सी.ई.आर. टी. 2001। 13. एस्के संतोष, म.प्र. पाठ्यपुस्तक निगम द्वारा निर्धारित हिन्दी पाठ्यपुस्तकों में मूल्योन्मुखता का अध्ययन, (वर्ष 2006–07) लघु शोध प्रबंध, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इंदौर 14. रिकमन्डेशन्स ऑफ दी एटीफर्स्ट रिपोर्ट ऑन वैल्यू बेस्ड एजूकेशन (वर्ष 1999) डिपाटमेंन्ट रिलेटेड पार्लियामेंन्ट्री स्टेन्डिग कमेटी ऑन ह्यूमन रिसोर्स डेवलेपमेन्ट, अध्यक्ष श्री एस.बी. चव्हाण (इन्टरनेट पर उपलब्ध), 15. ''सर्च ऑफ वैल्यूज फ्राम द लाइव्ज ऑफ ग्रेटमेन'' क्षेत्रीय शिक्षण संस्थान भुवनेश्वर द्वारा वर्ष 2003 ।16. वर्ष 2004 में प्रकाशित पुस्तिका ''अ रिपोर्ट ऑन एम्पेरिकल इवैल्यूएशन ऑफ एन.सी.ई.आर.टी. टेक्सट बुक'' के 126–127 17. कमेटी ऑफ दी सेन्ट्रल एडवाइजरी बोर्ड ऑफ एजूकेशन, गवर्नमेंट ऑफ इंडिया वर्ष 2005–रेगुलेटरी मेकेनिजम फॉर टेक्सट बुक एण्ड पेरेलल टेक्सट बुक्स् टॉट इन दी स्कूल्स आऊट साइड दी गवर्निंग सिस्टम। 18 राष्ट्रीय शिक्षा नीति (वर्ष 1986) मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली, 19. विद्यालयी शिक्षा लिये राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, परिचर्चा दस्तावेज 2000, एन.सी.ई. आर.टी., नई दिल्ली। 20. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, (वर्ष 2005) एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली, मई 2006। 21. बासु डी.डी., भारत का संविधान, (वर्ष 2006) प्रेन्टिस हॉल, नई दिल्ली। 22. भारती, कक्षा 6 छत्तीसगढ़ राज्य शिक्षा केन्द्र द्वारा प्रकाशित। 23. भारती, कक्षा 7 छत्तीसगढ़ राज्य शिक्षा केन्द्र द्वारा प्रकाशित। 24. भारती, कक्षा 8 छत्तीसगढ़ राज्य शिक्षा केन्द्र द्वारा प्रकाशित।